

लोकविद्या कला समागम: विचार, आयोजन और प्रारूप

संजीव कीर्तने (09 May 2023)

लोकविद्या कला केंद्र की गतिविधियों के संदर्भ में विचाराधीन बिंदु

- (१) वर्ष २०२२ तक की बात।
- (२) वर्ष २०२३ और आगे ।
- (३) लोकविद्या कला समागम का आयोजन।
- (४) प्रबंधन से संबन्धित बातें।
- (५) अन्य सुझावों पर बातें।

धन्यवाद।

लोकविद्या समन्वय समूह इन्दौर

लोकविद्या कला समागम

1- २ जुलाई 2023 (शनिवार-रविवार , इंदौर) प्रस्तावना

- (१) लोकविद्या कला केंद्र विगत दो वर्षों से लोकविद्या दर्शन पर आधारित कला रचनाओं के सृजन के लिए प्रयत्नशील है ।
- (२) स्थानीय कलाकारों एवं कला प्रेमियों के साथ मिलकर नृत्य कला , चित्रकला,संगीत कथा- कविता, नाटक- फिल्मोंकन जैसी कला विधाओं में कुछ नई रचनाओं को शहर के सभागारों में प्रदर्शित किया गया है।
- (३) कला केंद्र पर प्रत्येक अमावस के दिन ज्ञान-पंचायत बैठाई जाती है और लोकविद्या दर्शन पर आधारित कला रचनाओं को सब के विचारार्थ रखा जाता है।
- (४) कलाकार ठान लें तो लोकविद्या दर्शन को वृहत समाज के लिए खोल सकता है और युवाओं को नया- सोचे-नया करें की प्रेरणा दे सकता है।

इसी विश्वास के साथ अगले कदम के रूप में ही दो दिवसीय लोक विद्या कला समागम का आयोजन प्रस्तावित है।

धन्यवाद।

महत्वपूर्ण

- (१) कला समागम के आयोजन में स्थानीय कलाकारों, कला प्रेमियों और कला समूहों -संस्थाओं की भागीदारी सुनिश्चित करना है।
- (२) कलाकार को लोकविद्या दर्शन को केंद्र में रखकर नई रचनाओं के सृजन करने की स्पष्ट चुनौती है इसलिए कलाकार खुले दिलो दिमाग से इस दर्शन के गुण दोषों को लोगों के बीच खोल कर रख दें ।
- (३) लोगों के बीच पहुंचाने का इल्म ही तो कलाकार के पास होता है। सही गलत का फैसला तो लोगों पर छोड़ दिया जाए।

आखिर लोकहित की तराजू पर तोलने का ही यह एक प्रयास है। (४) आप अपनी कला के साथ तैयारी बैठकों में सहर्ष आमंत्रित है ।

पहली तैयारी बैठक दिनांक 28 अप्रैल 2023 शुक्रवार शाम 6:00 स्थान लोक विद्याकला केंद्र

लोकविद्या समन्वय समूह इंदौर 1924 डी सुदामा नगर इंदौर ।

संपर्क दाजी 6263 686 195

After 25Apr2023Meeting:

लोकविद्या कला समागम

लोकधर्म के रास्ते खोलता कलाकार्य

आयोजक: लोक विद्या समन्वय समूह इंदौर;

प्रस्तावित प्रारूप -

1. पहला सत्र - नया सोचें - नया करें (कलाकारों की तरकश के तीर) सुबह १० से दोपहर १ बजे तक। इसमें लोकविद्या के दावे को खोलती नई कला- रचनाओं का सृजन और प्रस्तुतीकरण होगा। इसमें आठ कला विधाओं को शामिल किया है।
2. भोजन - दोपहर १ से ३
3. दूसरा सत्र - समाजों की कला पहचान (सत्संगियों का ज्ञान - पिटारा) लोकहित की संत परंपरा की समझ के आधार पर ज्ञान की गैर बराबरी को पाटने के रास्ते खोलता सत्संगी मार्ग। दोपहर ३से ६
4. तीसरा सत्र - स्वराज ज्ञान पंचायत (कला सृजन का अखाड़ा) शाम ७ से रात १०

कुछ सुझाव -

1. स्थानीय समाजों और स्थानीय कलाकारों को लेकर ऐसे आयोजन करना एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है।

2. लोकविद्या कला केंद्र इन्दौर पर माह मई और जून में रिहर्सल्स होती रहें और जुलाई में आयोजन सभागार में होगा।
3. बारिश का मौसम होने से आयोजन के दिन यदि ज्यादा बारिश होती है तो आयोजन धुल जाएगा।
4. हम ये कर सकते हैं कि तैयारी पूरी जोर-शोर से करें और इस पूरे समय के दौरान लोगों को तैयार करते रहें।

आगे के लिए यह एक मजबूत ढांचा बनाने की दृष्टि से भी एक आवश्यक प्रक्रिया है।

विद्या आश्रम सारनाथ बनारस। स्थान लोकविद्या कला केंद्र इंदौर 1924 डी सुदामा नगर इंदौर । दिनांक प्रत्येक अमावस के दिन। समय: सुबह 10:00 से दोपहर 4:00 बजे ।

लोकविद्या कला केंद्र इन्दौर

आर्थिक व्यवस्था

(१) एक कला सहायक १००००/- प्रति माह

(२) अन्य खर्च (बैनर, पोस्टर, टाइपिंग, फोटोकॉपी, ट्रान्सपोर्टेशन, ट्रेवल, बिजली इत्यादि २००००/-प्रतिमाह)

(३) प्रत्येक अमावस के दिन लोकविद्या कला समागम का आयोजन १००००/- प्रतिमाह

कुल खर्च ४००००/-प्रतिमाह

प्रतिवर्ष ४,८०,०००/-

इस राशि को जन सहयोग से ही इकठ्ठा करना है ।

लोकविद्या समन्वय समूह इन्दौर ।

- 1) प्रत्येक अमावस के दिन लोक विद्या कला समागम का आयोजन लोकविद्या कला केंद्र सुदामा नगर पर होता रहेगा और इस दौरान युवा कलाकारों से बातचीत होती रहेगी , समाजों के कलाकारों से बातचीत होती रहेगी और जो उद्देश्य तय किए हैं उनकी प्राप्ति की दिशा में हम सतत आगे बढ़ते रहेंगे।
 - a) इस नियमित कला गतिविधियों के लिए आवश्यक आर्थिक व्यवस्था का विवरण पहले ही दिया है।
- 2) प्रत्येक तिमाही के बाद एक बड़े लोकविद्या कला समागम का आयोजन शहर के किसी सभागार में होना है या फिर किसी गांव बस्ती की चौपाल पर होना है । यानी पूरे वर्ष में 4 बड़े आयोजन लोकविद्या कला समागम के होंगे।
 - a) इन आयोजनों में इंदौर शहर के अलावा या इंदौर के आसपास के गांवों के अलावा अन्य स्थानों से भी कलाकार आएंगे ।
- 3) तिमाही लोकविद्या कला समागम के आयोजन का खर्च प्रत्येक तिमाही प्रारंभ होने के समय तय कर लिया जाएगा कि कितना उसमें खर्च आने वाला है और उस खर्च की व्यवस्था कैसे की जाएगी क्योंकि प्रत्येक

तिमाही का बड़ा आयोजन अलग-अलग आकार का होगा और इसीलिए उसकी आर्थिक व्यवस्था भी हमें उस आयोजन के संदर्भ में तय करना होगी।

After 09May2023 Meeting:

लोकविद्या कला समागम इंदौर

पहला सत्र: समाज सृजन का कला मार्ग

- (१) इंदौर स्वच्छता की ओर निरंतर बढ़ चला। अनेक अलग-अलग किस्म के नए-नए आयाम खुलते जा रहे हैं, उन्हीं में से एक की बात यानी कला, कलाकारों और कला प्रेमियों की बात है।
- (२) पिछले कुछ वर्षों में इंदौर के सौंदर्यीकरण की योजनाओं के चलते, कलाकारों की बहुत बड़ी भूमिका सामने दिखने लगी है। सड़कों, बगीचों, नदी किनारों और खाली दीवारों पर कलाकारों की कलाकारी दिखने लगी है। बड़ी संख्या में चित्रकारों को काम मिला है और दाम भी मिला है। इस पृष्ठभूमि में एक प्रस्ताव शहर के कलाकारों के विचार हेतु प्रस्तुत है।

नृत्यकला, चित्रकला, लघुकथा, कविता, संगीत, नाटक, फिल्मांकन, सत्संग और स्ट्रीटशो जैसी कलाओं में सक्रिय कलाकार अपने सुझाव दिनांक 31 मई 2023 तक भेज सकते हैं।

प्रस्ताव

1. शहर के सौंदर्यीकरण की योजनाओं में सभी कलाविधाओं के कलाकारों की बड़े पैमाने पर भागीदारी कैसे संभव होगी?
2. क्या इंदौर शहर के साथ-साथ छोटे शहर-कस्बे-गांव भी ऐसे स्थान हैं, जहां पर कलाकारों की बहुत बड़ी संख्या में भागीदारी हो सकती है ?
3. कलाकार की हैसियत समाज के किसी भी ज्ञानी से कम नहीं होती। कलाकार समाज के सृजन में कलामार्ग से उतना ही बड़ा योगदान दे सकता है जितना कोई बहुत बड़ा पढ़ा-लिखा इंजीनियर, प्रोफेसर या डॉक्टर देता है। तो फिर कलाकार की आमदनी भी तो उतनी होना चाहिए? यह कैसे संभव होगा?

तीनों मुद्दों पर आपके विचार आमंत्रित हैं। माह जुलाई 2023 इंदौर में हम एक सभागार में आयोजन करने जा रहे हैं जिसमें सभी के सुझावों को शामिल करते हुए समाज सृजन के कलामार्ग को बनाने का प्रयास करेंगे।

पहले सत्र का तैयारी पत्र बनाने में आपके सुझावों का स्वागत है।

दूसरा सत्र: समाजों की कला पहचान

सत्संगियों का ज्ञान पिटारा

- (१) छोटी-छोटी बस्तियों, गांवों, कस्बों में बसने वाले छोटे-छोटे समाजों के सत्संगियों के पास ज्ञान का पिटारा होता है। इस खजाने में सदियों से सहेजा संतों का ज्ञान होता है।
- (२) सत्संगियों में इनके अपने समाज की कला पहचान भी झलकती है।
- (३) जीवन मृत्यु के चक्र को सत्संगी समझते हैं। समाज को न्याय, त्याग, भाईचारा जैसे नैतिक मूल्यों से भर देने की बातें सत्संग में करते हैं। संत लोग सत्ता को कैसे देखते हैं? समाज को तोड़ने वाली प्रवृत्ति को कैसे खत्म कर सकते हैं। ऐसी गूढ कठिन बातों को भी सत्संगी करते हैं।
- (४) मालवा निमाड़ अंचल के सत्संगी बीघा-दोबीघा जमीन पर खेती किसानी करते हैं। अलग-अलग किस्म के कारीगर हैं। भील आदिवासी और नाना प्रकार की जाति बिरादरी के लोग हैं। सब मेहनती, हुनरमंद और ज्ञानी होते हैं। इनकी कला की समझ देखते बनती है। अनेक वाद्यों को बजाना, माईक बगैर बुलंद आवाज में रातभर सत्संग करना, समाज के व्यवहारों को निभाना और घर परिवार में रहते सत्संग करते रहना, इनके ज्ञान का हिस्सा है।

लोकविद्या सत्संग के इस दूसरे सत्र में हम देखेंगे कि कला के मार्फत समाज सृजन में सत्संगी कैसे लगे रहते हैं। सत्संगियों के साथ तीन प्रस्तावों पर विचार-विमर्श भी होगा।

प्रस्ताव

1. इंदौर शहर और अन्य स्थानों पर स्वच्छता अभियानों के चलते, समाजों के सत्संगियों की बड़े पैमाने पर भागीदारी कैसे संभव है?
2. समाजों का ज्ञान, विश्वविद्यालय के ज्ञान से अलग होता है। उनकी इस लोकविद्या के बल पर जीवनयापन करने वाले सत्संगियों की कला और ज्ञान को बढ़ाने, फैलाने और मजबूत करने के कौन से कारगर उपाय हैं?
3. लोकविद्या कला समागम के आयोजन मालवा -निमाड़ अंचल में करने हेतु सत्संगी समूह बनाना।

तीसरा सत्र: कला सृजन का अखाड़ा, कलाकारों की तरकश के तीर

- (१) छोटी-छोटी बस्तियों, गांवों, कस्बों में बसनेवाले छोटे-छोटे समाजों के लोगों की कला की समझ अदभूत होती है।
- (२) लोकविद्या समन्वय समूह इंदौर के साथी पिछले लगभग बारह वर्षों से किसानों, कारीगरों, आदिवासियों, छोटे-छोटे दुकानदारों और इन सबके परिवारों की स्त्रियों के बीच ज्ञान पंचायतें बैठाते रहे हैं। इस दौरान, इस लोक की लोकविद्या और विश्वविद्यालय की विद्या के बीच कैसा टकराव है यह भी समझने के मौके मिलते रहे हैं। लोक की लोकविद्या पर अपना जीवन निर्वाह करने वाले गरीब हैं, ईमानदार

हैं, मेहनती हैं, हुनरमंद हैं, ज्ञानी हैं, देश दुनिया की समझ रखते हैं। अपनी बस्ती और गांव छोड़कर देश और दुनिया भर के देशों में जाते हैं और अपनी भाषा, पहरावा, जाति- बिरादरी-समाज की पहचान वहां भी बनाए रखते हैं।

(३) करोड़ों ऐसे लोकविद्याधर समाज के लोगों के ज्ञान-दर्शन का सीधा टकराव विश्वविद्यालय के संगठित ज्ञान पद्धति से है जिसके चलते इन्हें विश्वविद्यालय की तुलना में ना तो मान है, ना सम्मान है और ना ही मूल्य मिलता है।

(४) लोकविद्या दर्शन की समझ कला मार्ग से भी संभव है क्योंकि भारत के छोटे-छोटे समाजों के पास कलाओं का भंडार होता है। समाज सृजन का कला मार्ग बनाने की पहल युवा कलाकारों ने नया सोचें-नया करें के मंत्र के साथ की है। पिछले दो वर्षों में कुछ नई रचनाओं का इसी संदर्भ में निर्माण भी हुआ है।

इस भूमिका के साथ तीन प्रस्तावों पर विचार होना है।

प्रस्ताव

1. लोकविद्या कला समागम के आयोजन, प्रत्येक माह की अमावस के दिन अलग-अलग स्थानों पर करना। इन समागमों में विभिन्न कलाओं के स्थानीय कलाकारों द्वारा बनाई गई रचनाओं को प्रदर्शित करना।
2. ज्ञान-पंचायतों के माध्यम से रचना के नए विषय खोलना। कलाकार और कलाप्रेमी मिलकर एक ऐसे ढांचे को बना सकते हैं जिसके चलते कला निर्माण के लिए आवश्यक संसाधन आसानी से उपलब्ध हो सके।
3. शहर और गांव दोनों स्थानों पर समाज के नवनिर्माण की योजनाओं में कला जगत की पहल और देखल बराबरी की भागीदारी के साथ कैसे संभव होगी इसके रास्ते बनाना।

तीसरे सत्र की तैयारी के लिए आपके सुझावों का स्वागत है।

दाजी (६२६३६८६१९५)
लोकविद्या कला केंद्र इंदौर
१९२४डी सुदामा नगर इंदौर